यह कहा जाता है कि उन के ऊपर इतना अधिक बोझ नहीं डाला जाना चाहिये, तो यह बात कुछ समझ में आने लायक नहीं मालूम देती है। हमारे देश की जो अर्थ व्यवस्था है उसका केवल दस प्रतिशत या उससे भी कम सरकार के नियंत्रण में है। दूसरी तरफ दुनिया में जो स्वतंत्र अर्थ व्यवस्था का सब से बड़ा देश अमरीका है, वहां की बीस प्रतिशत से भी अधिक अर्थ व्यवस्था वहां की सरकार नियंत्रित करती है। इस्पात उद्योग के ऊपर जो संकट आया था इस्पात के उद्योगपतियों ने वहां उसकी कीमतें बढ़ाने की बात सोची और उसको ले कर वहां प्रेजीडेंट कैनेडी ने जो कदम उठाया अगर वैसा ही कोई कदम अपने देश में उठाया जाए तो पता नहीं निजी क्षेत्र के जो समर्थक हैं, वे किस प्रकार का शोरगुल मचायेंगे। मैं समझता हूं कि हमें निश्चित रूप से सन्तुलित कदम आगे बढ़ाने की आज जरूरत है।

अब मैं अपने देश की कृषि व्यवस्था के सम्बन्ध में थोड़ा सा निवेदन करना चाहता हूं। बराबर यह कहा गया है कि कृषि का उत्पादन अपने देश में बढ़ना चाहिये लेकिन वह नहीं बढ़ रहा है। इसके तीन महत्वपूर्ण कारण हैं। पहला तो यह है कि जब तक हम बाढ़ को रोकने के लिए कोई उपाय नहीं करते हैं, उसको रोकने में सफल नहीं होते हैं, तब तक पैदावार नहीं बढ़ सकती है। इसी प्रकार से जब तक देश में जो सूखा पड़ता है, उससे बचाने का कोई उपाय नहीं निकालते हैं, तब तक पैदावार नहीं बढ़ सकती है। तीसरी बात यह है कि जब तक हम किसानों को कोई इंसेंटिव नहीं देते हैं, प्रोत्साहन नहीं देते हैं, प्रोटैक्शन नही देते हैं, तब तक उत्पादन नहीं बढ़ सकता है। बीसवीं शताब्दी के आरम्भ से इस देश में उद्योगों का जो विकास हुआ है, उसका इतिहास देखने से स्पष्ट हो जाता है कि हमारे देश के उद्योगपतियों को उद्योगों के विकास के लिए बराबर राज्य की ओर से कितने ही प्रकार के संरक्षण दिए जाते रहे हैं और अब भी दिये जा रहे हैं। दूसरी तरफ इस देश में किसान को खेती के विकास के लिए राज्य की तरफ से अभी तक किसी प्रकार का संरक्षण नहीं दिया जा सकता है। तीन चार वर्षों से सरकार इस बात पर विचार कर रही है कि खेती की फसल के लिए भी बीमे की प्रणाली को काम में लाया जाए और उन्हें खेती की उपज का उचित मूल्य मिले। लेकिन अभी तक इसके सम्बन्ध में कोई उचित निर्णय नहीं किया जा सका है। इस ओर भी माननीय मंत्री जी का ध्यान जाना आवश्यक है।

अन्त में मैं श्री दिनकर जी की कविता की चार पांच पंक्तियां कह कर अपने वक्तव्य को समाप्त कर दूंगा। चीन के हमले के बाद हमारे देश में जो स्थिति उत्पन्न हुई उसी को ध्यान में रख कर उन्होंने यह कविता लिखी है जिस की तरफ मेरा ख्याल है कि हम में से प्रत्येक का ध्यान जाना चाहिये। उन्होंने लिखा है :——

कुछ समझ नहीं पड़ता, रहस्य यह क्या है।
जानें, भारत में बहती कौन हवा है।
गमलों में हैं जो खड़े, सुरम्य सुदल हैं,
मिट्टी पर के ही पेड़ दीन दुर्बल हैं।

जब तक है यह वैषम्य, समाज सड़ेगा,
किस तरह एक हो कर यह देश लड़ेगा?

सब से पहले यह दुरित-मूल काटो रे।
समता जाओ, खाइयां-खड्ड पाटो रे ।।
बहुवाद वहां की शिरा-सार छांटो रे।
जो मिले अमृत, सब को समान बांटो रे।

वैषम्य घोर जब तक यह शेष रहेगा,
दुर्बल का ही दुर्बल यह देश रहेगा।

17.08 hrs.

RELEASE OF MEMBER

Mr. Speaker: I have to inform the House that I have received the following communication, dated the 9th March, 1963, from the Deputy Commissioner, Sambalpur:—

"I have the honour to inform you that Shri Kishen Pattnayak, Member, Lok Sabha, has been released from custody on furnishing bail on the 7th March, 1963 pending submission of charge-sheet by Police."

— - —